2 जुलाई 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देशभर में शिक्षण शिविरों की धूम

ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर मई एवं जून माह में पूरे देशभर में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। इन शिविरों के अन्तर्गत पिड़ावा के नेतृत्व में 121, दिल्ली के नेतृत्व में 27, भिण्ड के नेतृत्व में 76 व नागपुर के नेतृत्व में 28 स्थानों पर ग्रुप शिविर एवं औरंगाबाद, अजमेर, भिण्ड व उदयपुर में बाल एवं युवा संस्कार शिविर लगाये गये। इन ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के द्वारा हजारों बालकों ने जैनधर्म के सिद्धान्तोंका ज्ञान प्राप्त किया।

1. पिड़ावा (राज.) : यहाँ कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्त्वावधान में **दिनांक 26 मई से 2 जून तक राजस्थान व मालवा प्रान्त के 121 स्थानों पर सामूहिक शिविर लगाया गया।**

शिविर का उद्घाटन दिनांक 26 मई को जिनवाणी शोभायात्रा के साथ किया गया। ध्वजारोहण श्री अनिलकुमारजी इंजीनियर उज्जैन परिवार द्वारा किया गया। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष श्री देवेन्द्रकुमारजी बड़कुल भोपाल, मुख्य अतिथि श्री राजकुमारजी पुट्टामिल भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन व श्री विनोदकुमारजी जैन भोपाल थे। उद्घाटन श्री अशोककुमारजी सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल के करकमलों से हुआ।

उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा द्वारा किया गया। इस अवसर पर पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन द्वारा कक्षा ली गई, जिसमें उन्होंने शिविर की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

शिविर में ज्ञानगंगा प्रवाहित करने हेतु टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन, आचार्य धरसेन जैन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा एवं आचार्य अकलंक जैन सिद्धान्त महाविद्यालय बांसवाड़ा के विद्यार्थियों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।

यह शिविर राजस्थान के झालावाड़, कोटा, बूंदी, अजमेर, उदयपुर, चित्तौड़गढ जिलों में तथा मध्यप्रदेश के उज्जैन, गुना, मन्दसौर आदि जिलों में आयोजित किया गया।

लगभग सभी स्थानों पर बालबोध पाठमाला, छहढाला, जैनसिद्धांत प्रवेशिका आदि विषयों पर कक्षायें ली गईं। इसके अतिरिक्त पूजन प्रशिक्षण, जिनेन्द्र-भक्ति, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रथमानुयोग आधारित चित्रकला, जिनवाणी सज्जा आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस सभी कार्यक्रमों के माध्यम से बालकों को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान कराया गया। अन्तिम दिन परीक्षा एवं पुरस्कार वितरण भी किया गया।

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की पिड़ावा शाखा एवं मुमुक्ष मण्डल पिड़ावा द्वारा संचालित इस ग्रुप शिविर में हजारों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर के आमंत्रणकर्ता के रूप में श्री राजकुमारजी सहारनपुर एवं कुबेर के रूप में श्री केशवदेव जैन कानपुर का विशेष सहयोग रहा।

संपूर्ण शिविर का निर्देशन पण्डित नागेशजी पिड़ावा ने किया।

2. दिल्ली : यहाँ श्री दि. जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मन्दिर ट्रस्ट एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन विश्वास नगर के तत्त्वावधान में **दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के 27 स्थानों पर दिनांक 16 से 23 जून तक जैन जागृति शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।**

इस अवसर पर डॉ. सुदीपजी जैन, डॉ. वीरसागरजी जैन, डॉ. अशोकजी गोयल, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री के अतिरिक्त श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन के विद्वानों एवं कन्या विद्या निकेतन दिल्ली की छात्राओं द्वारा शिविर में ज्ञानगंगा प्रवाहित करने का कार्य किया गया।

ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रेरित यह शिविर विश्वास नगर, रघुवरपुरा, अशोका एन्क्लेव, पीरागढी, बुद्धविहार व गाँधी चौक बहादुरगढ हरियाणा, छाछी बिल्डिंग कृष्णानगर, साधनगर, न्यू उस्मानपुर, शिवाजी पार्क, पालम गाँव, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद, बड़ौत, बागपत, खेकड़ा, काँधला, सरवना, तीरगरान मेरठ, खतौली, गंगेरू, किरवल, कानुनगोन रुड़की, श्यामपुर बाईपास ऋषिकेश, छत्ताजम्बूदास सहारनपुर, वामपुर, छपरोली, नई मण्डी मुजफ्फरनगर, शामली आदि 27 स्थानों पर लगा।

शिविर के संयोजक पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली व पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली एवं निदेशक पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर व पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर थे।

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सम्पादकीय –

जैन अध्यात्म

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

प्रत्येक द्रव्य व उनकी विभिन्न पर्यायों के परिणमन में उनके अपने-अपने कर्ता, कर्म, करण आदि स्वतंत्र षट्कारक हैं, जो उनके कार्य के नियामक कारण हैं। ऐसी श्रद्धा का बल बढ़ने से ही ज्ञानी ज्यों-ज्यों उन षट्कारकों की प्रक्रिया से पार होता है, त्यों-त्यों उसकी आत्मशुद्धि में वृद्धि होती जाती है।

जब कार्य होना होता है, तब कार्य के नियामक अंतरंग कर्ता-कर्म आदि षट्कारक एवं पुरुषार्थ, काललब्धि तथा निमित्तादि पाँचों समवाय स्वतः मिलते ही हैं और नहीं होना होता है तो अनन्त प्रयत्नों के बावजूद भी कार्य नहीं होता तथा तदनुरूप कारण भी नहीं मिलते। मिथ्यात्व एवं अनन्तानुबन्धी कषाय के अभाव से अकर्तावाद सिद्धान्त की ऐसी श्रद्धा हो जाती है कि जिससे उसके असीम कष्ट सीमित रह जाते हैं।

बस, इसीलिए तो आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में जीवाजीवाधिकार के तुरन्त बाद ही कर्ताकर्म अधिकार लिखने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। इसमें बताया गया है – जगत का प्रत्येक पदार्थ पूर्णतः स्वतंत्र है, उसमें होने वाले नित्य नये परिवर्तन या परिणमन का कर्ता वह पदार्थ स्वयं हैं। कोई भी अन्य पदार्थ या द्रव्य किसी अन्य पदार्थ या द्रव्य का कर्ता-हर्ता नहीं है।

समयसार के कर्ता-कर्म अधिकार का मूल प्रतिपाद्य ही यह है कि परपदार्थ के कर्तृत्व की तो बात ही क्या कहें, अपने क्रोधादि भावों का कर्तृत्व भी ज्ञानियों के नहीं है। जब तक यह जीव ऐसा मानता है कि मैं (आत्मा) कर्त्ता व क्रोधादि भाव मेरे कर्म हैं, तबतक वह अज्ञानी है तथा जब स्व-संवेदन ज्ञान द्वारा क्रोधादि आस्रवों से शुद्धात्म स्वरूप को भिन्न जान लेता है, तब ज्ञानी होता है।

यद्यपि जीव व अजीव दोनों द्रव्य हैं, तथापि जीव के परिणामों के निमित्त से पुद्गल कर्मवर्गणाएँ स्वतः अपनी तत्समय की योग्यता से कर्मरूप परिणत होती हैं और पौद्गलिक कर्मों के निमित्त से जीव अपनी तत्समय की योग्यता से रागादि परिणामरूप से परिणमित होता है। इसप्रकार जीव के व कर्म के कर्ता-कर्म सम्बन्ध नहीं हैं, क्योंकि न तो जीव पुद्गलकर्म के किसी गुण का उत्पादक हैं और न पुद्गल जीव के किसी गुण का उत्पादक हैं। केवल एक-दूसरे के निमित्त से दोनों का परिणमन अपनी-अपनी उपादान की योग्यतानुसार होता है। इसकारण जीव सदा अपने भावों का कर्ता होता है, अन्य का नहीं।

यद्यपि आत्मा वस्तुतः केवल स्वयं का ही कर्त्ता-भोक्ता है, द्रव्यकर्मों का नहीं, तथापि द्रव्यकर्मों के उदय के निमित्त से आत्मा को सांसारिक सुख-दुःख का कर्ता-भोक्ता कहा जाता है, परन्तु ऐसा कहने का कारण पर का या द्रव्यकर्म का कर्तृत्व नहीं है, बल्कि आत्मा में जो अपनी अनादिकालीन मिथ्या मान्यता या अज्ञानता से राग-द्वेष-मोह कषायादि भावकर्म हो रहे हैं, उनके कारण यह सांसारिक सुख-दुःख का कर्ता-भोक्ता होता है। वस्तुतः आत्मा किसी से उत्पन्न नहीं हुआ, अतः वह किसी का कार्य नहीं है तथा वह किसी को उत्पन्न नहीं करता, इस अपेक्षा वह किसी का कारण भी नहीं है। अतः दो द्रव्यों में मात्र निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है, कर्ता-कर्म सम्बन्ध नहीं है। ध्यान रहें, निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध दो द्रव्यों में होता है, जो कि पूर्ण स्वतंत्र व स्वावलम्बी होते हैं।

आत्मा जब तक कर्मप्रकृतियों के निमित्त से होनेवाले विभिन्न पर्यायरूप उत्पाद-व्यय का परित्याग नहीं करता, उनके कर्तृत्व-भोक्तृत्व की मान्यता नहीं छोड़ता, तबतक वह अज्ञानी, मिथ्यादृष्टि एवं असंयमी रहता है। जब वह अनन्त कर्म व कर्मफल के कर्तृत्व-भोक्तृत्व के भाव का परित्याग कर देता है, तब वह बंध से रहित होकर केवल ज्ञाता-दृष्टा हो जाता है।

जिसप्रकार नेत्र विभिन्न पदार्थों को देखता मात्र है, उनका कर्ता व भोक्ता नहीं होता; उसीप्रकार ज्ञान बन्ध तथा मोक्ष को एवं कर्मोदय तथा निर्जरा को जानता मात्र है, उनका कर्ता व भोक्ता नहीं होता। ऐसी श्रद्धा से ज्ञानी पर के कर्तृत्व-भोक्तृत्व के अहंकारादि एवं असंयमादि दोषों से निर्वृत्त हो स्वरूपसन्मुख हो जाते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द शुभ और अशुभ दोनों कर्मों को कुशील कहते हैं। अशुभकर्म को कुशील और शुभकर्म को सुशील माननेवाले अज्ञानीजनों से वे पूछते हैं कि जो कर्म हमें संसाररूप बंदीगृह में बंदी बनाता है वह पुण्यकर्म सुशील कैसे हो सकता है?

''रागी जीव कर्म से बंधता है और वैराग्य को प्राप्त जीव कर्मबंधन से छूटता है, अतः शुभाशुभ कर्मों में प्रीति करना ठीक नहीं है।

वस्तुतः यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि शुद्धोपयोग पर ही

केन्द्रित हैं, वे शुभाशुभ दोनों ही भावों को एक जैसा संसार का कारण होने से हेय मानते हैं।''

समयसार के हिन्दी-टीकाकार पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा भी यही कहते हैं कि -

''पुण्य-पाप दोऊ करम, बन्ध रूप दुर मानि।
शुद्ध आतमा जिन लह्यो, नमूँ चरण हित जानि।।

पुण्य व पाप दोनों ही कर्म बन्धरूप हैं, अतः दोनों ही दुःख हैं।'' ऐसा जानो।

इसप्रकार मोक्षमार्ग में पुण्य-पाप का क्या स्थान है, यह बात अत्यन्त स्पष्ट हो गई है, फिर भी पापकार्यों से बचने के लिए पुण्य की भी अपनी उपयोगिता है - इस बात को दृष्टि से ओझल न करते हुए यथायोग्य पुण्याचरण करते हुए संसार के कारणभूत पुण्य के प्रलोभन से बचें और इसका ध्यान रहे कि पाप से बचने के लिए और आत्मज्ञान के लिए पुण्यात्माओं की शरण में रहते हुए पुण्य को ही धर्म न समझ लिया जाए।

इसप्रकार समयसार के जीवाजीवाधिकार में 'जैन अध्यात्म' की दृष्टि से जीवाजीव से भेदज्ञान कराते हुए तथा कर्ता-कर्माधिकार के माध्यम से कर्ता-कर्म के सम्बन्ध से जीव के अकर्तृत्व का भान कराते हुए पुण्य-पाप अधिकार में पुण्य-पाप दोनों को ही संसार का कारण बताने के साथ भूमिकानुसार पुण्य की उपयोगिता दर्शाते हुए आस्रव, बंध एवं मोक्ष का स्वरूप दिखाकर एक बार पुनः सर्वविशुद्ध अधिकार द्वारा कर्ता-कर्म का स्वरूप विस्तार से बताया है। इनके अतिरिक्त पूर्वोक्तानुसार अन्य आध्यात्मिक ग्रन्थों में भी जो जैन अध्यात्म प्रस्तुत किया गया है उसका यदि पाठक अवलोकन करेंगे तो निःसंदेह वे आत्मानुभूति को प्राप्त कर लेंगे। सभी आत्मानुभूति प्राप्त करें, इसी मंगल कामना के साथ विराम। ●

श्रुतपंचमी उत्साहपूर्वक संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 13 जून को श्रुतपंचमी के अवसर पर सामूहिक जिनपूजन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा श्रुतस्कंध के भेद-प्रभेद विषय पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम में श्री महावीर विद्या निकेतन के विद्यार्थियों द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त सभी विद्यार्थियों ने जिनवाणी को कण्ठ में धारण करने हेतु कंठपाठ करने का संकल्प भी किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित मनीषजी शास्त्री 'सिद्धान्त' ने किया।

(पृष्ठ 7 का शेष ...)

पहले मिथ्यात्व नामक सुभट पर करणलब्धिरूपी तलवार से प्रहार किया। उसके बाद उल्टी बुद्धि रूपी मजबूत कोट का उल्लंघन कर **आपने सम्यग्दर्शनरूपी स्थिर और अभंग स्थल की प्राप्ति की अर्थात् आपने प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति की।**

इसप्रकार आप पहले गुणस्थान से सीधे चौथे गुणस्थान में आ गये; क्योंकि अनादि मिथ्यादृष्टि जीव प्रथम गुणस्थान से दूसरे या तीसरे गुणस्थान में नहीं जाता और क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि भी नहीं होता; क्योंकि दूसरा सासादन गुणस्थान तो गिरने का गुणस्थान है, अत: वह सम्यग्दर्शन के छूटते समय ही होता है और तीसरा सम्यक्मिथ्यात्व नामक गुणस्थान सम्यक्मिथ्यात्व कर्म के उदय में होता है, जो अभी है ही नहीं। सम्यक्-प्रकृति के नहीं होने से क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि भी नहीं हो सकता।

यह तो आप जानते ही होंगे कि अनादि मिथ्यादृष्टि जब धर्म आंरभ करता है तो क्षयोपशमलब्धि, विशुद्धिलब्धि, देशनालब्धि और प्रायोग्यलब्धि पूर्वक करणलब्धि में प्रवेश करता है।

करणलब्धि में मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय नामक महाभयंकर कर्म के तीन टुकड़े कर देता है; जिनके नाम क्रमश: ह्न मिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व और सम्यक् प्रकृति हैं। इनमें से जब मिथ्यात्व नामक प्रकृति का उदय होता है, तब पहला गुणस्थान होता है, सम्यक्मिथ्यात्व नामक प्रकृति का उदय होता है, तब सम्यक्मिथ्यात्व नामक तीसरा गुणस्थान होता है, जब मिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व एवं अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया और लोभ का उदयाभावी क्षय एवं इन्हीं के आगामी निषेकों के सदवस्थारूप उपशम के साथ सम्यक्प्रकृति नामक कर्म का उदय होता है, तब क्षयोपशम सम्यग्दर्शन होता है।

यह क्षयोपशम सम्यग्दर्शन चौथे गुणस्थान में भी हो सकता है।

अनादि मिथ्यादृष्टि जीव को तो सबसे पहले मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया और लोभ ह्न इन पाँच प्रकृतियों के उपशम से प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन ही होता है। मिथ्यात्व कर्म की उक्त तीन प्रकृतियों और अनंतानुबंधी की चौकड़ी के क्षय से क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है; वह चौथे से लेकर सातवें गुणस्थान तक कभी भी हो सकता है।

इसप्रकार उक्त पंक्तियों का भाव यह है कि हे सिद्ध भगवान ! जब आप अनादि मिथ्यात्व की अवस्था में थे, प्रथम गुणस्थान में थे; तब आपने क्षयोपशम, विशुद्धि, देशनालब्धि प्राप्त कर अपने शुद्धात्मा की सही पहिचान की और प्रायोग्यलब्धिपूर्वक करणलब्धि में प्रवेश किया। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

3. भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा **श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 18 जून तक नवमां सामूहिक जैन बाल संस्कार शिविर** का आयोजन किया गया।

इस सामूहिक बाल संस्कार शिविर में मध्यप्रदेश के भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना जिलों और उत्तरप्रदेश के इटावा, मैनपुरी, फिरोजाबाद, एटा, झाँसी, ललितपुर इसप्रकार 12 जिलों के विभिन्न 76 स्थानों पर बाल संस्कार शिविर लगाया गया।

इस अवसर पर ज्ञानगंगा प्रवाहित करने हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर में अध्ययनरत 68 व 28 स्नातक विद्वानों, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से 17, श्री आचार्य धरसेन दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा से 10, श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिर से 4 व ब्र.बहिनों तथा स्वाध्यायी विद्वान 48 – इसप्रकार कुल 175 विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 9 जून को श्री कुन्दकुन्द नगर सिद्धक्षेत्र सोनागिर में श्री मुकेश कुमार जैन (जैन ज्वैलर्स) ग्वालियर द्वारा किया गया।

ग्रुप शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया था, जहाँ आसानी से कोई विद्वान नहीं पहुँच पाता है। इस शिविर में सभी वर्गों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया गया था तथा शिविर में कक्षा अनुसार पाठ्यक्रम के आधार से सभी जगह कक्षायें ली गईं। सभी स्थानों पर प्रात: सामूहिक पूजन व कक्षायें, दोपहर में सामूहिक कक्षा, सायंकाल कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति, प्रौढकक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम व श्रुतपंचमी पर जिनवाणी शोभायात्रा, विधान आदि कार्यक्रम कराये गये।

शिविर के निरीक्षण हेतु गठित 5 टीमों ने सभी जगह पहुँचकर निरीक्षण रिपोर्ट तैयार की एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

इस अवसर पर 9754 बालक–बालिकाओं एवं 5246 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

दिनांक 19 जून को श्री सीमंधर जिनालय देवनगर भिण्ड में इस जैन बाल संस्कार शिविर का सामूहिक समापन समारोह हुआ।

शिविर के निर्देशक पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, सहनिर्देशक पण्डित महेन्द्रजी अमायन, प्रमुख संयोजक पुष्पेन्द्रजी जैन भिण्ड, संयोजक पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित सुमितजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित मयंकजी शास्त्री भिण्ड व पण्डित चेतनजी शास्त्री गोरमी थे।

इसके पूर्व दिनांक 6 से 8 जून तक यहाँ अध्यापकों के लिए त्रिदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया।

तीन दिवसीय इस प्रशिक्षण शिविर में प्रात: सामूहिक पूजन के उपरान्त प्रथम प्रवचन पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं द्वितीय प्रवचन ब्र. रवीन्द्रजी का हुआ। दोपहर में ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कक्षा निर्देश एवं ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' के प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा शिविर के पाठ्यक्रम का स्पष्टीकरण किया गया।

इस संपूर्ण आयोजन में ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सानिध्य का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को हुआ। **– पुष्पेन्द्र जैन**

4. नागपुर (महा.) : यहाँ विदर्भ के 21 एवं महाकौशल प्रान्त के 7 स्थानों पर **दिनांक 2 से 9 जून तक बाल एवं युवा संस्कार शिविर** का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर नागपुर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आदेशजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित आभासजी जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

बालकों में जैन संस्कार डालने हेतु श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन एवं अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा के 40 विद्वानों ने अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

इस शिविर में 28 स्थानों के 1092 छात्रों एवं हजारों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

दिनांक 9 जून को नागपुर में भव्य सामूहिक समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। इसमें सभी स्थानों पर प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित नंदकिशोरजी काटोल ने एवं आभार प्रदर्शन श्री नरेशजी जैन नागपुर ने किया।

शिविर के निदेशक श्री अशोकजी नागपुर व पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली एवं संयोजक पण्डित नंदकिशोरजी, पण्डित आदेशजी व पण्डित अमितजी जैन थे।

5. उदयपुर (राज.) : यहाँ नया सर्राफा बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के 'आओ जानें जैनधर्म' अभियान के अन्तर्गत में दिनांक 9 से 16 जून तक चतुर्थ युवा एवं बाल शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली व ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में विशिष्ट विद्वानों द्वारा 'सम्यग्दर्शन–छहढाला के आधार पर, द्रव्य–गुण–पर्याय तथा चार अभाव' विषयों पर दोनों समय 45–45 मिनिट की कक्षायें ली गईं। इन कक्षाओं के पूर्व स्थानीय विद्वानों द्वारा महापुरुषों के जीवन, महान ग्रन्थ की विशेषताएं, जैनधर्म के सिद्धान्त व अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर 15–15 मिनिट प्रकाश डाला गया।

दिनांक 16 जून को प्रात:काल जैन–चित्र प्रतियोगिता भी रखी गई।

शिविर में लगभग 300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया, जिसमें 45 बच्चे सम्मिलित हैं। कक्षाओं का समय युवाओं की सुविधानुसार रखा गया, जिससे उनको भाग लेने में सुविधा रही।

दिनांक 13 जून को 'श्रुत पंचमी महोत्सव' मनाया गया। प्रात: श्रुत अर्चना के पश्चात् शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें लगभग 350 साधर्मियों ने भाग लिया। शोभायात्रा के पश्चात् डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक '45वीं वर्षगांठ' समाज के सभी को वितरित की गई।

सायंकाल 'स्वाध्याय का महत्व एवं आवश्यकता' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका संचालन पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री द्वारा किया गया। गोष्ठी के उपरान्त बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा के प्रवचनों की डी.वी.डी. एवं वी.सी.डी. का विमोचन श्री फतहलालजी अखावत द्वारा किया गया।

दिनांक 16 जून को युवा साथियों को स्वाध्यायार्थ 'क्या मृत्यु अभिशाप है' व 'जैनधर्म विवेचन' पुस्तकें वितरित की गईं।

इस शिविर के माध्यम से युवाओं व बालकों ने जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों को समझा व उनको चरित्र में उतारने की प्रेरणा प्राप्त की।

6. अजमेर (राज.) : यहाँ वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट पुरानी मण्डी के तत्त्वावधान में 23वाँ ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम में दिनांक 8 से 16 जून तक सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा एवं पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा द्वारा कक्षायें ली गईं।

शिविर में 72 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों के आवागमन हेतु बस की व्यवस्था भी की गई।

शिविर के अन्तिम दिन अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा अजमेर द्वारा नारेली भ्रमण का कार्यक्रम भी रखा।

संपूर्ण कार्यक्रम में प्रो. उमरावमल जैन, डॉ. संजीव जैन, श्री प्रकाशजी गंगवाल, श्री अनिलजी जैन, श्री माणकचन्दजी पाण्ड्या, श्री नेमीचन्दजी ढोटिया का सहयोग प्राप्त हुआ। **– प्रकाश पाण्ड्या**

7. औरंगाबाद (महा.) : यहाँ श्री टोडरमल स्नातक परिषद (महाराष्ट्र प्रान्त) द्वारा दिनांक 25 से 31 मई तक तृतीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता, ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, ब्र. नन्हेभैया सागर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर आदि 15 विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग 850 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर के अवसर पर यहाँ मुमुक्षु समाज हेतु स्वतंत्र जिनमंदिर व स्वाध्याय भवन बनाने का संकल्प किया गया - यह इस शिविर की विशेष उपलब्धि रही।

शिविर के संयोजक पण्डित संजयजी राउत, पण्डित किशोरजी धोगड़े एवं पण्डित चिन्तामणजी भूस आदि शास्त्री विद्वान थे। ●

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2013

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 28 जुलाई 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 29 जुलाई 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
मंगलवार 30 जुलाई 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

– ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक - परीक्षा बोर्ड)

सिद्धभक्ति

1 पृष्ठभूमि –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मंगलाचरण

(दोहा)

चिदानन्द स्वातमरसी, सत् शिव सुन्दर जान।
ज्ञाता–दृष्टा लोक के, परम सिद्ध भगवान।।

सम्यग्दृष्टि भव्य जीव इन्द्र पद, चक्रवर्ती पद एवं तीर्थंकर पद प्राप्त कर अन्त में सिद्धपद को प्राप्त करते हैं ह्न इसप्रकार सम्यक्त्व की महिमा बताते हुए आचार्य समन्तभद्र लिखते हैं ह्न

(बसंततिलका)

देवेन्द्रचक्रमहिमानममेयमानं
राजेन्द्रचक्रमवनीन्द्रशिरोर्चनीयम्।
धर्मेन्द्रचक्रमधरीकृतसर्वलोकं
लब्ध्वा शिवं च जिनभक्तिरुपैति भव्या:।।[१]

अमाप है महिमा जिसकी ह्न ऐसे देवेन्द्रचक्र को, बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजाओं के द्वारा पूजनीय हैं चरण जिनके ह्न ऐसे चक्रवर्ती के चक्ररत्न को और सम्पूर्ण लोक को नीचे कर दिया है जिसने ह्न ऐसे तीर्थंकर के धर्मचक्र को प्राप्त कर सम्यग्दृष्टि भव्यजीव अन्त में जिनभक्ति से सिद्धचक्र को प्राप्त करता है, सिद्धों के समूह में सम्मिलित हो जाता है।

देखो, अपार महिमावाले देवेन्द्रों के देवेन्द्रचक्र, चक्रवर्तियों के राजेन्द्रचक्र, यहाँ तक कि तीर्थंकरों के धर्मचक्र को पाकर भी एक न एक दिन छोड़ना ही पड़ता है; सिद्धचक्र को प्राप्त कर उसे कभी भी छोड़ना नहीं पड़ता। एक प्रकार से उक्त तीनों चक्र तो अनित्य हैं, क्षणभंगुर हैं, सदा रहनेवाले नहीं हैं; किन्तु सिद्धचक्र तो नित्य ही है; क्योंकि अब वह कभी भी छूटनेवाला नहीं है।

यह तो हमने बालबोध पाठमालाओं में ही पढ़ लिया था कि जो जीव एक बार सिद्ध दशा को प्राप्त कर लेते हैं, मुक्त हो जाते हैं; वे जीव फिर कभी भी संसार में लौटकर नहीं आते। अनन्त काल तक सिद्धदशा में ही रहते हैं।

चक्र का अर्थ समूह होता है। सिद्धचक्र माने सिद्धों का समूह।

आचार्य पद्मनन्दिकृत सिद्धपूजन की जयमाला की निम्नांकित पंक्ति ध्यान देने योग्य है ह्न **प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह**

उक्त पंक्ति में समागत **सुसिद्धसमूह** का अर्थ भी **सिद्धचक्र** ही है। अत: उक्त पूजन भी **सिद्धचक्र** की ही पूजन है।

१. रत्नकरण्डश्रावकाचार, छन्द ४१

इसप्रकार हम देखते हैं कि चक्राकार (गोलाकार) सिद्धशिला में विराजमान विशुद्ध सिद्धों का समुदाय ही सिद्धचक्र है।

विधान माने विस्तार। किसी प्रकरण का भेद–प्रभेदपूर्वक विस्तार से कथन करना ही विधान है। इसप्रकार सिद्धों का भेद–प्रभेदपूर्वक विस्तार से कथन होने से यह समस्त सिद्धों की पूजन ही **सिद्धचक्र पूजन विधान** है।

मण्डल का अर्थ भी एक प्रकार से चक्र ही है; अत: **सिद्धचक्र मण्डल विधान पूजन** लिखने की आवश्यकता नहीं है; **सिद्धचक्र पूजन विधान** मात्र इतना ही पर्याप्त है।

प्रसीद का अर्थ है प्रसन्न होना। इसप्रकार सिद्धपूजन की उक्त पंक्ति का अर्थ हुआ ह्न हे विशुद्ध सुसिद्ध सिद्धचक्र (सभी सिद्ध भगवान) हम पर प्रसन्न होवो।

प्रसीद शब्द का अर्थ समझ में न आने के कारण कुछ लोग **प्रसीद** के स्थान पर **प्रसिद्ध** बोलने लगे हैं। वे इसप्रकार बोलते हैं कि **प्रसिद्ध विशुद्ध सुसिद्ध समूह।** उनका यह बोलना ठीक नहीं है।

देवेन्द्रचक्र भी सौधर्मादि देवेन्द्रों के परिकर का ही नाम है। चक्रवर्ती का चक्ररत्न भी उसका परिकर ही है और तीर्थंकरों का धर्मचक्र तो गोलाकार उनका समवशरण है ही।

हम सबकी बुद्धि में यह जम गया है कि चक्र एक गोलाकार वस्तु का ही नाम है। कुंभकार का चक्र भी गोलाकार है, बैलगाड़ी के चक्र की भी यही स्थिति है। आवागमन की क्रान्ति में गोलाकार चक्र का बहुत बड़ा योगदान है। चक्र की खोज से आवागमन की रफ्तार बढ़ गई है।

यह भी एक अद्भुत संयोग है कि ढाई द्वीप भी गोलाकार है। जितना बड़ा और जैसे आकार वाला ढाई द्वीप है; उतनी बड़ी और वैसे ही आकार की सिद्धशिला है। इसप्रकार ढाई द्वीप और सिद्धशिला ह्न दोनों ही ४५ लाख योजन के विस्तार के हैं।

यह तो हम सब जानते ही हैं कि जो व्यक्ति जहाँ से, जिस क्षेत्र से और जिस आकार में मोक्ष जाता है; वह सिद्धशिला में भी ठीक उसके ऊपर उसी आकार में अनंतकाल तक के लिए ही विराजमान रहता है।

कहते हैं कि सिद्धशिला में कहीं एक इंच भी जगह खाली नहीं है। इसका तो स्पष्ट ही यह अर्थ हुआ कि एक प्रकार से सम्पूर्ण ढाई द्वीप ही सिद्धक्षेत्र है। तात्पर्य यह है कि **जमीन से तो जीव मोक्ष गये ही हैं; समुद्र के जल से भी अनन्त सिद्ध हुए हैं; अन्यथा सिद्धशिला में समुद्रों वाला स्थान खाली रहना चाहिए।**

इसप्रकार यह सुनिश्चित हुआ कि अनंत सिद्धों के समूह का नाम ही सिद्धचक्र है और उनके गुणों का स्मरण करते हुए विस्तार से उनका गुणगान करना, पूजन करना ही **सिद्धचक्र पूजन विधान है।**

कविवर संतलालजी कृत यह सिद्धचक्र विधान अध्यात्मरस से भरपूर एक भक्तिकाव्य है। जहाँ भी अवकाश मिला, वहाँ उन्होंने सिद्धों के गुणगान में कोई कसर नहीं छोड़ी।

आठ पूजनों की आठ जयमालाओं में उन्होंने भक्तिगंगा के प्रवाह को इसप्रकार प्रवाहित किया है कि भक्तों का मन आंदोलित हो उठता है।

इस कृति में भी उन्हीं जयमालाओं के भाव को स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा।

पहली पूजन की जयमाला

प्रथम पूजा की जयमाला में यह बताया गया है कि यह आत्मा परमात्मा किसप्रकार बनता है। प्रथम गुणस्थानवर्ती मिथ्यादृष्टि जीव किसप्रकार आत्मसाधना करके सिद्धपद प्राप्त करता है।

पूरी जयमाला में महाभारत युद्ध के सांगरूपक के माध्यम से यह बताया गया है कि करणानुयोग के अनुसार मुक्ति प्राप्त करने की विधि क्या है; इस आत्मा ने कर्मों पर किसप्रकार विजय प्राप्त कर सिद्धदशा को पाया है। प्रारम्भिक दोहे में ही कहा गया है कि ह्न

(दोहा)

जग आरत भारत महा, गारत करि जय पाय।
विजय आरती तिन कहूँ, पुरुषारथ गुणगाय।।

उक्त दोहे की प्रथम पंक्ति में जो **भारत महा** शब्द है, उनका स्थान परिवर्तन कर दो तो **महाभारत** हो जायेगा। महाभारत शब्द आज महायुद्ध का प्रतीक बन गया है।

इस दोहे में कहा गया है कि हे सिद्धभगवान ! सम्पूर्ण जगत महादु:खी है। जगत के दु:खों का मूल कारण यह मोह राजा है। आपने उस मोह राजा से महाभारत अर्थात् महायुद्ध कर उसे गारत करके, बरबाद करके उसे जीत लिया है।

मैं उस जीत की विजय पताका की आरती अर्थात् गुणगान करता हूँ। उसमें आपने जो पुरुषार्थ किया; मैं उस पुरुषार्थ का गुणगान करता हूँ।

तात्पर्य यह है कि इस जगत में **मोह का महाभारत (महायुद्ध) मचा हुआ है। उस मोहरूपी शत्रु को गारत करके, बरबाद करके जो विजय आपने प्राप्त की है; उसकी विजय गाथा मैं गाता हूँ। इस विजय गाथा में जो पुरुषार्थ आपने किया है; उसके गुणों का गान किया जायेगा।**

हे भगवन ! आपने यह महायुद्ध स्वयं के स्वोन्मुखी पुरुषार्थ के बल पर जीता है। इसमें आपने किसी का सहयोग नहीं लिया है। जब आपने मोह राजा को जीता था; तब पूरी तरह आत्मस्थ थे, ध्यानस्थ थे। आप पूरी तरह निहत्थे थे। आपकी मुट्ठी भी बंधी हुई नहीं थी; क्योंकि **मुट्ठी भी तो एक हथियार है। बंद मुट्ठी दूसरों को मारने के लिए काम आती है; अत: हथियार नहीं तो और क्या है ?**

आप किसी पर को आँख नहीं दिखा रहे थे; क्योंकि **आँख्वे दिखाना भी तो हथियार हैं।** आपकी दृष्टि तो नासाग्र थी।

आप किसी को हाथ उठाकर आशीर्वाद भी तो नहीं दे रहे थे; क्योंकि दूसरों को काबू में करने का यह भी तो एक हथियार ही है।

इसप्रकार आप एकदम निहत्थे थे। आपने यह युद्ध हथियारों के बल पर नहीं जीता था; पूरी तरह आत्मशक्ति से जीता था, आत्मज्ञान और आत्मध्यान से ही जीता था। इसतरह आप एकदम महान हैं।

आगे पूरी जयमाला पद्धरि छन्द में है। उसमें कहा गया है कि हे भगवन ! आपने सबसे पहले मिथ्यात्व नामक बैरी पर प्रहार किया है।

छन्द मूलत: इसप्रकार है ह्न

(पद्धरि छन्द)

जय करण कृपाण सु प्रथम बार, मिथ्यात सुभट कीनो प्रहार।
दृढ़ कोट विपर्यय मति उलंघि, पायो समकित थल थिर अभंग।।१।।

करण शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। करण का अर्थ कर्ण (कान) तो होता ही है, पाँचों इन्द्रियों को भी करण कहते हैं। मन को तो अन्त:करण कहा ही जाता है। करण का अर्थ भाव–परिणाम भी होता है। पाँच लब्धियों में करण नाम की एक लब्धि भी है; जिसके भीतर तीन करण होते हैं ह्न अध:प्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण।

जयमाला के इस छन्द में करण शब्द का प्रयोग करणलब्धि के परिणामों, भावों के अर्थ में ही हुआ है।

युद्ध का यह उदाहरण उस समय का है, जब युद्ध तलवारों से लड़े जाते थे। इसलिए यहाँ कहा गया है कि हे भगवन ! आपने सबसे पहले **करणलब्धि के परिणामों रूप कृपाण से, तलवार से मिथ्यात्व नामक सुभट पर प्रहार किया।**

तात्पर्य यह है कि आपने मोहरूपी राजा के नाश के लिए सबसे

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

2 जुलाई 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

श्री दिव्यध्वनिसार महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक गोष्ठी संपन्न

दिल्ली : यहाँ मधुविहार पटपड़गंज में अहिंसाधाम धर्म संस्थान, आई.पी. एक्सटेन्शन में श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर दिनांक 14 से 16 जून तक कविवर राजमलजी पवैया द्वारा रचित श्री दिव्यध्वनिसार विधान एवं जिनवाणी शोभायात्रा का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. योगेशजी अलीगंज, डॉ. सुदीपजी दिल्ली, पण्डित राकेशजी शास्त्री नांगलोई दिल्ली, पण्डित अशोकजी शास्त्री दिल्ली आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 15 जून को दोपहर में आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन पण्डित अशोजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया। इस गोष्ठी में स्थानीय एवं बाहर के विद्वानों द्वारा **जैनधर्म का इतिहास, चिन्तन व स्वरूप** पर विवेचना की गई।

विधि विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित ऋषभजी एटा, पण्डित समकितजी शास्त्री गुना, पण्डित सुमितजी शास्त्री टीकमगढ एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली के सहयोग से संपन्न हुये।

संपूर्ण कार्यक्रम आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली के तत्त्वावधान में ज्ञानचेतना ट्रस्ट व अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा दिलशाद गार्डन के आयोजकत्व में संपन्न हुये, जिसमें स्थानीय विद्वान अशोकजी शास्त्री, सुरेन्द्रजी जैन, नीरजजी जैन, अतुलजी जैन, पीयूषजी जैन एवं सुमितजी शास्त्री का अपूर्व सहयोग रहा। **– नीरज जैन**

शिकागो (अमेरिका) में श्रुतपंचमी पर्व

यहाँ जैन सेन्टर ऑफ शिकागो के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 13 जून तक प्रतिदिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के ज्ञान एवं वैराग्यवर्धक मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

अन्तिम दिन 13 जून को श्रुतपंचमी पर्व अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ मनाया गया। इस पर्व पर विशेष रूप से श्रुत की आराधना की गई तथा सायंकाल पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के श्रुतपंचमी पर प्रासंगिक व मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि यहाँ श्रुतपंचमी पर चर्चा पहली बार हुई। अधिकांश लोगों ने श्रुतपंचमी पर्व का नाम भी पहली बार सुना था।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ
4 से 13 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
2 से 9 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
9 से 18 सितम्बर	इन्दौर	दशलक्षण पर्व

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। **– मंत्री**

पत्राचार का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स - 0141-2704127**

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127